हारोहाली ट्रेनिंग इंस्टीट्यूट

ग्रामीण औरतों के आर्थिक विकास में सफल

आदर्श सभलोक

गांवों में औरतों की दशा सुधारने के लिए यह बहुत ज़रूरी है कि उन्हें आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनाया जाए। इसके लिए यह आवश्यक है कि उन्हें गांव में ही ऐसे काम दिलवाए जाएं जिनसे उन्हें सारा साल आमदनी होती रहे। खेतीबाड़ी के अलावा उन्हें दूसरे कामों में ट्रेनिंग दी जाए ताकि अपने खाली समय में वे दूसरे काम करके पैसा कमा सकें।

बंगलौर के निकट हारोहाली में स्थित ट्रेनिंग इंस्टीट्यूट एक ऐसा ही ग्रामीण प्रोजेक्ट है। यह इंस्टीट्यूट अगस्त 1990 में शुरू किया गया था। इसके तहत पांच सालों में 3000 औरतों को ट्रेनिंग देने का मकसद है। इस प्रोजेक्ट का खर्चा भारत सरकार उठा रही है।

ट्रेनिंग के विभिन्न आयाम

जून 1991 में दो साल से भी कम समय में कुल 905 लड़कियों व औरतों को ट्रेनिंग दी जा चुकी है। इन में से 318 लड़कियों व औरतों को विशेष प्रकार के हुनर सिखाए गए। 399 औरतों को 15 समूहों में बांट कर खेतीबाड़ी, पशुपालन, सब्जियों व फलों के उत्पादन को बढ़ाने के नए तरीके सिखाए गए। 188 औरतों को नौ समूहों में ज्ञान बढ़ाने के लिए भिन्न विषयों में ट्रेनिंग दी गई।

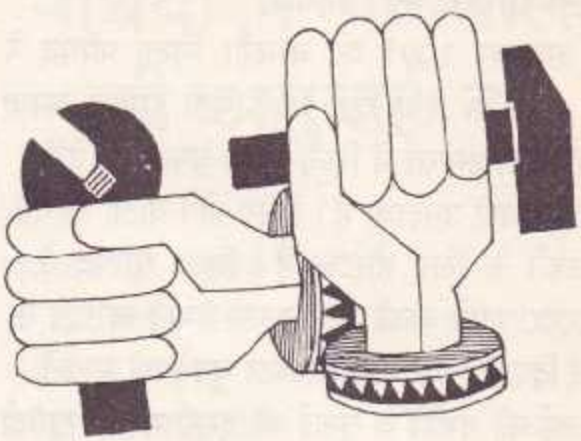

उन्हें स्वास्थ्य के संबंध में विस्तृत जानकारी दी गई। बैंकों के बारे में जानकारी दी गई व बचत करने के तरीकों के बारे में बताया गया। इसके साथ ही उन्हें प्रौढ़ शिक्षा दी गई व लाइब्रेरी चलाने के बारे में ज्ञान दिया गया। साथ ही साथ उन्हें बच्चों के पालन पोषण के सही तरीकों व स्वच्छता के बारे में जानकारी दी गई।

अगरबत्तियों का प्रशिक्षण

औरतों को अगरबत्तियां बनाने का काम भी सिखाया गया। अब यह काम कई छोटे-छोटे केंद्रों में किया जा रहा है। तमासन्द्रा गांव के केंद्र में बहुत अच्छा काम हो रहा है। इस गांव में वर्षा कम होने के कारण खेतों पर मज़दूरी का काम सिर्फ चार-पांच महीने के लिए मिलता था। अब अगरबत्तियां बनाने के काम से औरतों को साल भर काम मिलता रहता है जिससे उनकी आर्थिक स्थिति पहले से अच्छी हो गई है। गांव की औरतें अब अपने खाली समय में अगरबत्तियां बनाती हैं। इस काम से वह प्रतिदिन 20 रुपये तक कमा लेती हैं।

ज़िला परिषद का सहयोग

अक्तूबर 1991 को बंगलौर ज़िला परिषद ने इस काम के लिए एक बहुत बड़ी इमारत बनवा दी है। इस इमारत में भिन्न-भिन्न प्रकार की ट्रेनिंग की सुविधाएं उपलब्ध हैं। ट्रेनिंग लेने वाली औरतों के रहने के लिए होस्टल हैं। ज़िला परिषद ने 90,000 रुपये बाकी ज़रूरत का समान खरीदने के लिए दिए हैं। इस धन से स्वैटर बुनने की मशीनें, सिलाई की मशीनें व बुनाई की दूसरी मशीनें खरीदी गई हैं। इसमें इतने अच्छे ढंग से ट्रेनिंग दी जाती है कि ज्यादा से ज्यादा औरतें यहां ट्रेनिंग के लिए आने लगी हैं।

औरतों को 25-30 के समूह में बांटा जाता है और इन्हें ट्रेनिंग के दौरान 6 से 12 हफ्ते तक के लिए रहने का स्थान दिया जाता है। औसतन 90-100 औरतें व लड़कियां हर रोज़ यहां ट्रेनिंग लेने के लिए आती हैं। इन सभी को यहां मुफ्त खाना दिया जाता है। ट्रेनिंग लेने के लिए कोई फ़ीस नहीं देनी होती बल्कि ट्रेनिंग के लिए इस्तेमाल होने वाला सारा सामान भी उन्हें मुफ्त दिया जाता है।

ट्रेनिंग देने वाली सभी औरतें हैं। यह गांव की औरतों को मशीनों पर स्वैटर बनाना, रैडीमेड कपड़े तैयार करना और बैग व पर्स बनाना सिखाती हैं। इसके साथ ही साथ औरतों को लिज्जत पापड़ बनाने भी सिखाए जाते हैं। केंद्र में काम सीखने के समय की कोई पाबंदी नहीं है। औरतें अपने घर का काम खत्म कर केंद्र पर आ जाती हैं व काम सीखती हैं। कभी कभी इंस्टीट्यूट में ट्रेनिंग देने के लिए बाहर से विशेषज्ञों को बुलाया जाता है जो स्वास्थ्य, परिवार नियोजन, प्रौढ़ शिक्षा व बागवानी के बारे में ज्ञान देते हैं।

आत्मनिर्भरता का उद्देश्य

इन सब कामों को सिखाने का एक ही मकसद है कि गांव की औरतें आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बन सकें। वे स्वयं ही अपने लिए गांवों में काम जुटा सकें व पैसा कमा सकें। इसीलिए गांव की औरतों को गाय-भैंस की सही देखभाल व दूध का उत्पादन ज्यादा बढ़ाने के बारे में भी जानकारी दी जाती है।

अच्छी ट्रेनिंग व्यवस्था से बंगलौर के आसपास के गांवों की हालत पहले से बहुत सुधर गई है। बहुत सारी औरतों ने ट्रेनिंग लेने के बाद अपने छोटे-छोटे व्यवसाय शुरू कर दिए हैं। बाकी औरतें केंद्र में जाकर काम का आर्डर ले आती हैं और घर से काम पूरा करके दे आती हैं। इससे होने वाली आमदनी वह अपने पास ही रखती हैं। इस तरह से उनकी कमाई पहले की अपेक्षा बढ़ गई है।

हारोहाली का यह इंस्टीट्यूट एक मिसाल बन गया है। यहां ट्रेनिंग लेकर कितनी ही औरतों का जीवन सुधर चुका है। कर्नाटक के गांवों में भी देश के दूसरे गांवों की तरह औरत पर अत्याचार होता है। औरत का मानसिक व शारीरिक शोषण होता है व उसे पति की मारपीट सहनी पड़ती है। अब कितनी ही औरतें व लड़कियां यहां ट्रेनिंग लेकर इज्जत भरा जीवन गुज़ार रही हैं। □